

Sonam Bala

(1)

4<sup>th</sup> April 2020

Saturday

(Dept of Geog.)

A.N.D. College, Shahpur Patory  
Samastipur

For B.A.-II (Hons) & B.A.-II (Subs)

Paper-III, भारत एवं विहार का भूगोल

### LECTURE - 4

#### भारत की जलवायु

अंतः उष्ण कटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) → विषुवत वृत्त पर स्थित अंतः उष्ण कटिबंधीय

अभिसरण क्षेत्र एक निम्न वायुदाब वाला क्षेत्र है। इस क्षेत्र में व्यापारिक पवनें मिलती हैं। अतः इस क्षेत्र में वायु ऊपर उठने लगती है। जुलाई के महीने में ITCZ  $20^{\circ}$  -  $25^{\circ}$  N अक्षांशों के आस-पास गंगा के मैदान में स्थित हो जाता है। इसे कभी-कभी मानसूनी गर्त भी कहते हैं। यह मानसूनी गर्त, उत्तर और उत्तर-पश्चिमी भारत पर तापीय निम्न वायुदाब के विकास को प्रोत्साहित करता है। ITCZ के उत्तर की ओर खिसकने के कारण पश्चिमी गोलार्ध की व्यापारिक पवनें  $40^{\circ}$  और  $60^{\circ}$  पूर्वी देशांतरों के बीच विषुवत वृत्त को पार कर जाती हैं। कोरियालिस बल के प्रभाव से विषुवत वृत्त को पार करने वाली इन व्यापारिक पवनों की दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर हो जाती है। यही पश्चिमी-पश्चिम मानसून है। शीत ऋतु में ITCZ दक्षिण की ओर खिसक जाता है। इसी के अनुसार पवनों की दिशा दक्षिण-पश्चिम से बदलकर उत्तर-पूर्व की ओर हो जाती है, यही उत्तर-पूर्व मानसून है।

#### भारतीय मानसून की प्रकृति

मानसून एक जलवायवी घटक है। मानसून को समझने के लिए इसका अध्ययन क्षेत्रीय स्तर की वजाय भूमंडलीय स्तर पर किया जाता है। दक्षिण अटलांटिक क्षेत्र में यदि हम वर्षा के कारणों को व्यवस्थित रूप से समझ

ले तो मानसून के कारणों को भी हम अच्छी तरह समझ सकते हैं। इसे निम्न चरणों में समझा जा सकता है—

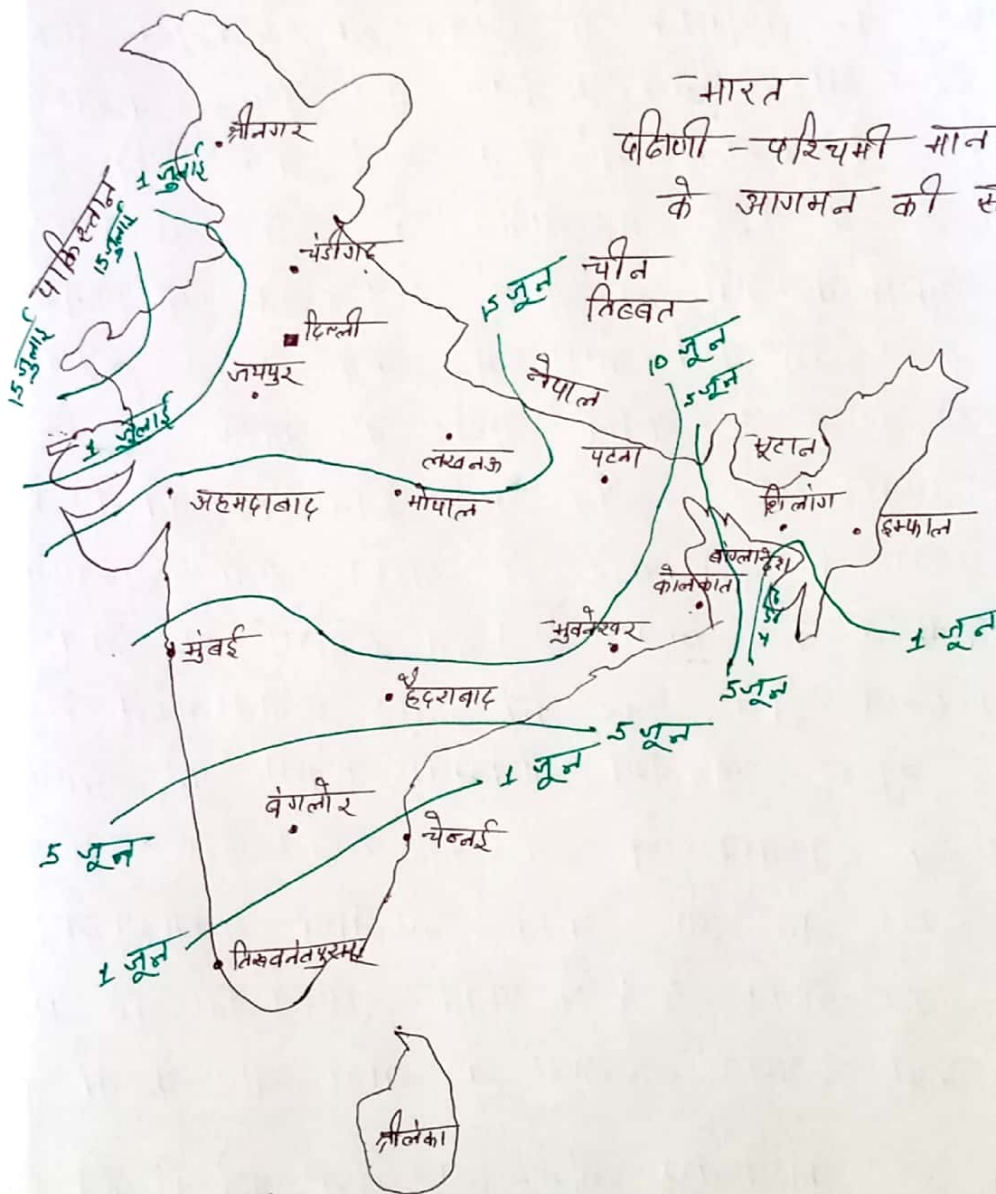
- 1) मानसून का आरंभ तथा उसका स्थल की ओर बढ़ना,
- 2) वर्षा लाने वाले तंत्र (जु उष्णकटिबंधीय चक्रवात) तथा मानसूनी वर्षा की आवृत्ति एवं वितरण के बीच संबंध
- 3) मानसून में विच्छेद

मानसून का आरंभ → 19 वीं सदी के अंत में, यह व्याख्या की गई थी कि गर्म के महीनों में स्थल और समुद्र के तापमान में अंतर ही मानसून पवनों के उपमहाद्वीप की चाल और चलने के लिए मंच तैयार करता है। अर्थात् और गर्म के महीनों में, जब सूर्य कर्क रेखा आ पर लंबवत् चमकता है, तो हिंद महासागर के उत्तर में स्थित विशाल स्रखंड अत्यधिक गर्म हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग पर एक गहन न्यून दाब क्षेत्र विकसित हो जाता है, क्योंकि स्रखंड के दक्षिण में हिंद महासागर अपेक्ष्यता धीरे-धीरे गर्म होता है, निम्न वायुदाब केन्द्र विषुवत रेखा के उस पार से दक्षिण-पूर्वी सन्मार्गी पवनों को आकर्षित कर लेता है। इन दशाओं में अंतः उष्ण कटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र उत्तर की ओर स्थानांतरित हो जाता है। इस प्रकार दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी पवनों को दक्षिण-पूर्वी सन्मार्गी पवनों के विस्तार के रूप में देखा जा सकता है, जो मध्य रेखा को पार करके भारतीय उपमहाद्वीप की ओर विक्षेपित हो जाती है। ये पवनें मध्यरेखा को  $40^\circ$  पूर्वी तथा  $60^\circ$  पूर्वी देशांतर रेखाओं के बीच पार करती हैं।

अंतः उष्ण कटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र की स्थिति में परिवर्तन का संबंध हिमालय के दक्षिण में उत्तरी मैदान के ऊपर से पश्चिमी जेट-प्रवाह द्वारा अपनी स्थिति के प्रत्यावर्तन से भी है, क्योंकि जेट-प्रवाह इस क्षेत्र से खिसकते ही दक्षिणी भारत में  $15^\circ$  उत्तर अक्षांश पर पूर्वी

जेट प्रवाह विकसित हो जाता है, इसी प्रकार पूर्वी जेट (3) प्रवाह को भारत में मानसून बर्स्ट (BURST) के लिए जिम्मेदार माना जाता है।

मानसून का भारत में प्रवेश → दक्षिण-पश्चिमी मानसून केरल तट पर 1 जून को पहुँचता है और शीघ्र ही 10 और 13 जून के बीच चेन्नई, पुणे, मुंबई व कोलकाता तक पहुँच जाती है। मध्य जुलाई तक संपूर्ण उपमहाद्वीप दक्षिण-पश्चिम मानसून के प्रभावी क्षेत्र हो जाता है।



भारत : दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के पहुँचने की सामान्य तिथियाँ